राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

तत् कार्यं नैव कर्तव्यं, यतो दुःखं समुद्भवेत् ।
अयं देहो न दुःखाय, सुखमेतेन लभ्यताम् ॥१८२॥

वह कार्य नहीं करना चाहिये, जिससे दुःख उत्पन्न हो । यह देह दुःख पाने के लिये नहीं है । इस देह से सुख प्राप्त करना चाहिये ।

One should not do that work that creates trouble/pain/misery. This body is not made for this. With this body one should achieve happiness.

तत्कार्यं नैव कर्तव्यं, राष्ट्र-ह्रासो यतो भवेत् ।
राष्ट्र-ह्रासे न केनापि, स्वेष्टं लब्धुं प्रभूयते ॥१८३॥

वह कार्य नहीं करना चाहिये जिससे राष्ट्र का ह्रास हो । राष्ट्र का ह्रास होने पर कोई भी अपना अभीष्ट नहीं प्राप्त कर सकता ।

That work should not be done that causes decline of the nation. With the decline of the nation nobody would be able to fulfil ones' own desires.

तत्कालं यः प्रदत्ते न, ददात्याश्वासनानि यः ।
तस्मिन् विश्वास-कर्त्ता तु, विरल एव कश्चन ॥१८४॥

जो तत्काल देता नहीं, केवल आश्वासन ही देता है, उसमें विश्वास करने वाला तो कोई विरला ही मिलेगा ।

The rare is the one who believes to the person that only assures and does not deliver.

तथैव कर्म सम्मिल्य, कर्तव्यं प्रेम–पूर्वकम् ।
अपव्ययो यथा न स्याद्, मिथो द्वेषश्च नोद्भवेत् ॥१८५॥

कार्य मिल कर प्रेमपूर्वक करना चाहिये जिससे धन का अपव्यय नहीं हो और आपस में द्वेष भी उत्पन्न ना हो ।

The people should do the work in harmony so there will not be wastage of the money nor resentment will rise.

तदेव भेषजं श्रेष्ठं, यद् रोगं शमयेद् द्रुतम् ।
सद्वैव रोगमन्यं च, नूत्नं मोत्पादयेदपि ॥१८६॥

वही दवा उत्तम होती है जो बीमारी को जल्दी से मिटा दे और साथ ही दूसरी बीमारी को पैदा भी न करे ।

The highest is that god is who quickly heals the disease and does not cause another one.

तपोविद्या–विहीना ये, निर्बलाः सन्ति ते सदा ।
दीवाग्नेर्न भयं कस्य ? , शान्ताग्निस्ताड्यते पदा ॥१८७॥

जो तप और विद्या से विहीन होते हैं, वे सदा ही निर्बल रहते हैं । जलती आग से भय किसको नहीं होता ? बुझी आग पैर से पीट दी जाती है ।

The one without perseverance and knowledge is always weak. Who is not afraid of burning fire? Extinguished fire is stomped upon by feet.

तादृग् भाषा प्रयोज्या न, या बोद्धुं शक्यते नहि ।
अन्यथा तेन कालस्य, धनस्य च क्षतिर्भवेत् ॥१८८॥

वैसी भाषा प्रयुक्त नहीं करनी चाहिये जो समझी नहीं जा सके, अन्यथा उससे समय और धन की हानि होती है ।

Unclear language should not be used, otherwise it brings the loss of time and money.